128
556
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 556

19-1

891.431
M317M

1366
1021

❀ बन्देमातरम् ❀

मनहरन श्याम

दूसरा भाग

राधेश्याम की धुन पर

अपूर्व राष्ट्रीय गान।

लेखक—

पं० मनोहर लाल शुक्ल,

मु० नरैनी पो० रसूलाबाद जि० फतेहपूर,

उर्फ़ प्रयागराज।

[सर्वाधिकार संरक्षित]

प्रथमबार २०००] [मूल्य एक आना

32

109

5556

143

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. OF INDIA
No 14.12.71
Date 558

प्रकाशक—पं० मनोहर लाल शुक्ल, मुहल्ला नरैनी, पोस्ट रसूलाबाद,
जिला फतेहपुर, उर्फ प्रयागराज।

मुद्रक—सरजू लाल, राजा प्रेस, रानीमंडी,
इलाहाबाद।

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
30 MAR. 1931
DEPARTMENT

❀ श्री मनहरन श्याम ❀

❀ बन्देमातरम् ❀

भारत देश हमारा प्यारा ।

बहती सरजू जमुना गंगा, दिखा रही है लहर उमंगा,
तीस कोट नर रहते संगा, सकल विश्व को दिल से प्यारा ।
भारत देश हमारा प्यारा० ॥

प्रगटे ब्यास राम चन्दर से, सत्य प्रतिज्ञा हरिश्चन्दर से,
मोहनदास कर्म चन्दर से, कहते देश हमारा प्यारा ।
भारत देश हमारा प्यारा० ॥

हम इस पर निज प्राण हरेंगे, दुख दारुण से नहीं डरेंगे,
निश्चय मुल्क स्वतन्त्र करेंगे, आंखों का यह तारा प्यारा ।
भारत देश हमारा प्यारा० ॥

राधेश्याम की धुन।

दो०—गांधी जी जो कह रहें, सही सही सब ठीक।
स्याही का लिखना न मिटे, मिटे न पत्थर लीक॥

अब सौकत अली रामपुर के, औ प्रयाग में सभा लगाया था।
मुशलिम दस बीस सभा में गये, वह उनको यही सुनाया था॥
सन तीस फरवरी छब्बीस को, लखनऊ साइमन आये थे।
हिन्दुओं से ज्यादा हक हुकूक, वे मुसलिम को दिलवाये थे॥
कुछ सभा से उठकर मुसलमान सौकत खां को समझाया है।
तुमने जो ऐसी बात कही, ये दिल में नहीं समाया है॥
ये गवरमेन्ट किसकी होती, तुम भी ये बात जानते हो।
तुमको तो ज्यादा रकम मिले, इससे तुम उसे मानते हो॥
झूठी शिक्षा जो देता है, औरों को देता है धोखा।
वृटिस की जेल देख आये, इससे तुम काम करो चोखा॥
मेरा गर कहना मानो तुम दुश्मन के नाम को नीच करो।
ये भारत वतन हमारा है, गांधी का झन्डा ऊंच करो॥
गर कहा नहीं मानोगे तुम, लो अब अपने घर जायेंगे।
गर कभी बुलाया मिटिंग में, हम कभी न पैर बढ़ायेंगे॥

दो०—इतना कह कर चल दिये, अपनी अपनी ओर।
सभा से शौकत भी चले, अपने घर की ओर॥

बाईस जुलाई पांच बजे, का किस्सा तुम्हें सुनाते हैं।
बाल मुकुन्द बसन्त लाल, ये जेल मलाका जाते हैं॥
विश्वम्भर केशव अमरनाथ, इन का दुश्मन संग जाता है।
पांचों ये अन्दर जेल गये, तब दुश्मन कथा सुनाता है॥
ये नेता पांचो जा करके, मार्डन को मेरे बिगाड़ दिया।
इनकी इस्पीचें सुन सुन कर, लड़के सब मार्डन छोड़ दिया॥
स्कूल मार्डन में लड़के, जुमला कुल सात सौ आते हैं।
इनकी इस्पीच सुनाने से, अब एक न पढ़ने जाते हैं॥
मास्टर जब ऐसे बैन कहा, साहब सुन कर हो गये खड़े।
मन में कुछ सोच विचार किया, तब नेतों से यह पूछ पड़े॥
क्यों गये आप मार्डन कालिज, क्यों झन्डा जाय लगाये थे।
दूसरी बात ये और भी है, क्यों लड़कों को बहकाये थे॥
यह सुन कर नेता बोल उठे, ठहरो मैं शीघ्र बताता हूँ।
मार्डन में नेता गये सही, जो किस्सा हुआ सुनाता हूँ॥

मार्डन कालिज है पबलिग का, दूसरों का नहीं इजारा है।
लड़के सब पबलिग के जाते, इससे स्कूल हमारा है॥

नेतों ने डांका पड़ा नहीं, बस झन्डा जाय लगाया था।
मार्डन से लड़के निकल निकल, आजादी गाना गाया था॥

बाइबिल अगर तुम देखा है, हमने क्या पाप कमाया है।
झन्डे के सिर्फ लगाने से, क्यों पुलीस हमें ले आया है॥

दो०—नेतों ने जब ये कहा, घोष हो गये आग।
फुंकारै देने लगा, जैसे काला नाग॥

नेतों की बात सुन करके, साहब मन में कुछ सोच लिया।
कुछ बात जरा भी किया नहीं, दो मिनट के अन्दर छोड़ दिया॥

कालिज के लड़के हैं जितने, आपस में बात ये करते हैं।
जेल तो कोई चीज नहीं, हम तोप से भी न डरते हैं॥

अब लड़कों ने ये हैं करके खुद निजी जलूस निकाला था।
प्राग में जितने सभा हुये, लड़कों का सब से आला था॥

लड़के सब ये अब कहते हैं, हम मार्डन कभी न जायेंगे।
हाथ में लेकर झन्डे को, मैदान जंग में आयेंगे॥

खादी पोशाक पहिन करके, हम बल बेदी पर जायेंगे।
ये प्राण निकल जाये तन से, हम तभी ये पैर हटायेंगे॥

हम प्रण करके ये कहते हैं, ये भारत वतन हमारा है।
भारत स्वाधीन बनायेंगे, हमने अब यही बिचारा है॥
ऐ भारत वासी शीघ्र उठो, फिर समय नऐ सा पाओगे।
इसमें गर नहीं सरीक हुये, तो कायर चोर कहाओगे॥
बस इसी से मैं भी कहता हूँ, झन्डे के तले शीघ्र आओ।
गांधी जी जेल में बन्द पड़े, उनको तो जरा शर्म खाओ॥
थोड़े दिन की जिन्दगानी है, झन्डा क्यों नहीं उठाते हो।
अपने सत धर्म पै अड़ करके, क्यों नहीं आज मर जाते हो॥

दो०—वाजिब था सो कह दिया, उचित नहीं विश्राम।
बिना बिजय के जो जिये, मां का दूध हराम॥

मौलाना सैइयद अता उल्ला, औ शाह बुखारी आये थे।
महमद सईद सिक्रेटर भी, ये पांचों प्राग में आये थे॥
पांचो नेता ये कहते हैं, पारक में सभा लगाना है।
मुशलिम भाई जो सोते हैं, उनको अब शीघ्र जगाना है॥
चाहे हिन्दू या मुशलिम हो, सब को अब शामिल होना है।
गर शामिल इसमें नहीं हुये, बस बाद में उनका रोना है॥
इतना जब कहा बुखारी ने, तब मुसलमान कुछ आये थे।
हाथों में झन्डा लिये हुये, आजादी गाना गाये थे॥

अब दहिने बायें हिन्दू हैं, औ बीच में मुसलिम जाते हैं।
जो मुसलिम बागी कांग्रेस से, वे देख इन्हें शरमाते हैं॥

पबलिक सब पारक पहुँच गई, जा करके सभा लगाहैं है।
मेघराज भी खुश हो कर ऊपर से जल बरसाते हैं॥

पानी जोरों से होता था भाई सब खड़े डोलत थे।
इस्पीच सुनाना बन्द किया. गांधी जै कार बोलते थे॥

नेतायें सभा से कहते हैं, भाई सब अपने घर जाओ।
कल अभी और मिटिंग होगी, ९ बजे रात को सब आओ॥

ग़र बारिस हमको देख पड़ी, पैलेस में सभा लगायेंगे।
ग़र मेघराज कुछ खैर किया, तो मोती पार्क सुनायेंगे॥

दो०—छोटे लड़कों ने कहा, दुश्मन हो हुशियार।
बानर की सेना करैं. शीघ्र अभी तैयार॥

छे साल से ले कर चौदह तक, बानर बन लड़के आते हैं।
झन्डे को कर से लिये हुये, सड़कों पर दूंद मचाते हैं॥

लड़के इतने हो गये जमा, गिनती से नहीं सिरात हैं।
चौक से लेकर पार्क तलक, सड़कों पर नहीं समाते हैं॥

बानर के सेनापित जो थे, कुछ जोश की बात पूछते थे।
झन्डे को कर में लिये हुये, ऊपर को शीघ्र कूदते थे॥

हम कभी नहीं डर सकते हैं, हम रामचन्द्र के सेना है।
रावण जो राज कर रहा है, वो राज शीघ्र ही लेना है॥

रावण तो सचमुच राक्षस है, कुछ थोड़ा लड़ने वाला है।
पर रामचन्द्र के शत आगे, वह डींग मारने वाला है॥

बानर के सेनापति जो हैं, औ सत का हाल बताते हैं।
ऐसा ही सब को लाजिम है, जैसा हम आज सुनाते हैं॥

सत पर प्रहलाद रहे कायम, औ राम को सत्य मानते थे।
रामचन्द्र के सिवा और, औ गैर को नहीं जानते थे॥

देखो प्रहलाद रहा छोटा, पर राम से नेह लगाया था।
सत का द्रोही हरनाकुस था, जो सूली उसे दिलाया॥

जल्लाद बुलाया हरनाकुस, जल्लाद सामने आते हैं।
सूली खाने के लिये आज, प्रहलाद संग में जाते हैं॥

प्रहलाद पै सूली असर न की, जल्लाद बहुत ही सरमाये।
प्रहलाद को लेकर संग चले, हरनाकुस के आगे लाये॥

दो०—हरनाकुस महराज को, है मेरा आदाब।
जो कुछ जाकर हम किया सुनिये आप जनाब॥

महराज ले गये हम इसको, सूली देने में कसर न की।
राम राम ये कहता था, इससे शूली कुछ असर न की॥

फिर भी समझाया बेटा को, अब राम को नाम नहीं लेना।
गर राम का नाम नहीं छोड़ा, तब होगा तुझे जहर देना॥

बेटा ये पिता से कहता है, क्यों मुझको आप सिखाते हो।
तुम तो खुद खंदक पड़े हुये, क्यों मुझको कुवाँ गिराते हो॥

गर राम को ध्यान धरे कोई, दुनिया में जसी कहायेंगे।
हैं राम गऊ औ निर्दोषी, वो बेड़ा पार लगायेंगे॥

हे पिता इसी से कहता हूँ, तुम भी ये नाम नहीं छोड़ो।
जो काम वतन में वाजिब हों, उससे न कभी मुख को मोड़ो॥

प्रहलाद पिता को समझाया, हरनाकुश एक न मानी है।
तब रामचन्द्र भी सोच लिया, रावण मिसाल अभिमानी है॥

अब रामचन्द्र भी पहुँच गये, अपना सब रूप बदल करके।
हरनाकुस के अब प्राण लिया, नरसिंह रूप धारण करके॥

कहते हैं सिर्फ यही गांधी, भारत को अब आजाद करो।
सब भारतवासी मिल करके, दुश्मन को अब बर्बाद करो॥

सहते जावो दुश्मन के वार, मुख से निकले कुछ आह नहीं।
जतला दो नौकर शाही को, इस मुल्क में हो निर्वाह नहीं॥

हम तुझे सुनाते हैं जालिम, हम काम जो करने वाले हैं।
छोटे से ले कर बड़े तलक, सब के सब मरने वाले हैं॥

दो०—गांधी जी से नहक को, ठाना तुमने बैर।
दुश्मन अपनी जान की, मर्ता समझना खैर॥

किस्सा अब शाह बुखारी का, सुन लीजै ध्यान लगा करके।
कांग्रेस से नेता जाते हैं, पैलिस में पहुँचे जा करके॥

अब शाह बुखारी खड़े हुए, कुछ थोड़ा हाल सुनाते हैं।
सुनने वाले इतने पहुँचे, पैलेस में नहीं समाते हैं॥

तब नेतों ने ये कहा शीघ्र, सब मोती पार्क चलियेगा।
जो शब्द कहै हम भले बुरे, तुम उसे गौर से सुनियेगा॥

जब शाह बुखारी खड़े हुये, उस सभा में यों ललकारा है।
कांग्रेस से बागी जनता को, बस उसको यों फटकारा है।

मेरी कुछ समझ नहीं आता, हिस्सा जो लोग मांगते हैं।
करना धरना सब बाद रहा, पहिले ही ढांक बांधते हैं॥

सौदा लेने के एवज में, शायद बाजार को जायेंगे।
जब जिन्स नहीं आई बिकने, तब सौदा क्या हम पायेंगे॥

सौदा बाजार का ये मतलब, मैदान जंग में आना है।
लोहू से कर दो लाल जमीं, पीछे स्वराज हक़ पाना है॥

बस यही सोच लो बागी जन, गर कांग्रेस में नहि आओगे।
मैं खूब सोच के कहता हूँ, तुम तिल भर हक़ न पाओगे॥

तुम गवरमेन्ट के कहने से, गर हिन्द में रार मचाओगे।
मै कसम खुदा की कहता हूँ, इसका फल बाद में पाओगे॥

दो०—शर्म न आती है तुम्हें, फिरो बचाते जान।
नजरों से हम देख ली, जितनी हिम्मत शान॥

तारीख अगस्त दूसरी का, बाम्बे का हाल बताते हैं।
नेता जो पकड़े गये वहां, उनके हम नाम सुनाते हैं॥

अब महामना बल्लभ भाई, बृटिस के ये मेहमान भये।
दौलती राम वो राम दास, ये भी लेकर के शान गये॥

शेरवानी इनके साथ रहे, सब के सब नेता काबिल थे।
हरडोकर डाक्टर संग गये, नेतों में ये भी शामिल थे॥

बाम्बे में नेता पहुँच गये, अब सिविल लैन को जाते हैं।
कुछ पुलीस आय कर रोक दिया, ओ शिविल न जाने पाते हैं॥

नेता ये पुलीस कहते हैं, क्या हुक्म नहीं जाने का।
पुलीस को याद शीघ्र आया, उनको वारन्ट दिखाने का॥

वारन्ट देखकर शीघ्र चले, चलने में जरा न छन्द किया।
देखो उन नौकरसाहिन को, ले जा कर जेल में बन्द किया॥

नेतों का हाल प्रयाग आया, हम बाम्बे जेल बहाल किया।
सब शुक्र मनाया नेतों का, कुल शहर शीघ्र हड़ताल किया॥

मंजूर अली जो नेता थे, कांग्रेस में काम किया आला।
नौकर शाही अब इनको भी, ले गई जेल बाला बाला॥

पहिले मंजूर अली पहुँचे, फिर बाद मास्टर जाता है।
लड़कों के न पढ़ने का कारण, अब साहब को समझाता है॥

मार्डन में जब मंजूर गये, गांधी की जै ललकारा था।
इस हरकत से मैं रोका था, तब मुझको भी फटकारा था॥

मंजूर अली ये कहते थे, झन्डे को अवश्य लगायेंगे।
लड़के आयेंगे मेरे पास, आजादी गाना गायेंगे॥

सब लड़कों से ये कहते थे, मार्डन कालिज बर्बाद करो।
आजादी झन्डा ले करके, अब भारत को आजाद करो॥

सबूत पायकर मजिस्ट्रेट, तीन माह की कैद दे दिया है।
मंजूर अली की कैद सुनकर, लड़कों ने कसम कर लिया है॥

हम पढ़ने अगर जांय मार्डन, तो काफ़िर के हम बच्चे हैं।
गर पढ़ने नहीं गये मार्डन, माँ पिता के अपने सच्चे हैं।

कुछ सत्याग्रही मार्डन में, धरना देने को जाते हैं।
कांग्रेस से अलग जो लड़के हैं, मार्डन में वही दिखाते हैं॥

जो पढ़ते रहे मार्डन में, वो लड़के अन्दर जाते हैं।
कांग्रेस से खिलाफ़ जो लड़के हैं, जाकर उनको समझाते हैं॥

क्यों आये आप आज मार्डन, दिल में कुछ शर्म न खाया है।
मंजूर आपके भाई थे, इस घोष ने कैद कराया है॥

दो०--लड़कों ने जब ये कहा, घोष हो गये लाल।
लड़कों से खुद ही कहा, छूरी लाव निकाल॥

छूरी औ हाकी ले करके, इन बच्चों को जा कर मारो।
जो चीज़ मार्डन की देखो, अग्नी में उसे शीघ्र जारो॥

अब लड़कों को क्या कहना था, कुर्सी औ मेज़ तोड़ते हैं।
कुछ लड़के और भी आय गये, जा कर ऐनों को फोड़ते हैं॥

कुछ लड़के घोष के पास रहे, आ कर बच्चों पर वार किया।
छूरी औ हाकी मार मार, बच्चों को शीघ्र गिराय दिया॥

खूनों की धारा बहती थी, तिसपर निकली कुछ आह नहीं।
बच्चे ये घाव से कहते हैं, बोटी कर दो परवाह नहीं॥

इतने लड़के आ गये वहां, मार्डन में नहीं समाते हैं।
लड़के डन्डों को सहते थे, पर आपन हाथ उठाते हैं॥

प्रहिले बंगाली रहे घोष, अब खुद हो गये इशाई हैं।
जब से सत्याग्रह शुरू हुआ, तब से बन गये कसाई हैं॥

दो०--शुक्ल मनोहर ने लिखा, सही सही सब हाल।
जो कुछ है इसमें लिखा, जरा नहीं है ,चाल।

भूल चूक हो गर मेरी, सज्जन लेय बनाय।
लिखूं तीसरे भाग में, दूंगा तुम्हें सुनाय॥

लावनी

क्या कहूँ कथा दुःख भरी व्यथा आंखों के तारे भारत की।
क्या थी क्या से क्या हुई दशा अब हाय हमारे भारत की॥
दिन थे वह भी अपने जब कि स्वर्गीय सुखों का साज रहा।
सिरताज रहे सब के होकर माता के सर पर ताज रहा॥
साम्राज्य रहा क्षिति-मण्डल पर सम्पन्न प्रपन्न समाज रहा।
पलटा खाया जुग ने ऐसा अब जाति का डूब जहाज़ रहा॥
धज्जी धज्जी उड़ रही आज बे काज बिचारे भारत की। क्या०
आता है खून उबल तन का कहते स्वदेश की पामाली॥
दाने दाने को तरस रहे सब हुई कहेर की कंगाली।
करने पर खून पसीने का भी एक नहीं भरती थाली॥
दिन काट रहे हैं भारतीय भूखे पीकर पानी खाली।
है बिलख बिलख रो रही प्रजा सब हाथ पसारे भारत की॥क्या०
काल कवर करने वाले हम महाकाल के काल रहे।
सत्य धर्म्म से अनल ज्वाल के ज्वालों के भी ज्वाल रहे॥
ज्ञान-दिवाकर से त्रिभुवन में तेजस तेज त्रिकाल रहे।
सदाचार में सदा अटल हम मेरु श्रृङ्ग उत्ताल रहे॥
न्याय नीति की कैसे क्या उपमा दूँ सारे भारत की। क्या०
कठिन तो क्या दुष्कर कर्तव्यों को भी सर करने वाले॥
भूप भगीरथ भये यहां पर भव्य भाव भरने वाले।
पुरुष हँस स्वायम्भुवमनु से धर्म्म ध्वजा धरने वाले॥
शिवि दधीचि से तन तज कर भी पर दुख के हरने वाले।
राम कृष्ण भी हुये आन सन्तान करारे भारत की॥ क्या०